कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) .....

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में .....

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☐ अंग्रेजी ☐

विषय इतिहास

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 15-03-2019

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

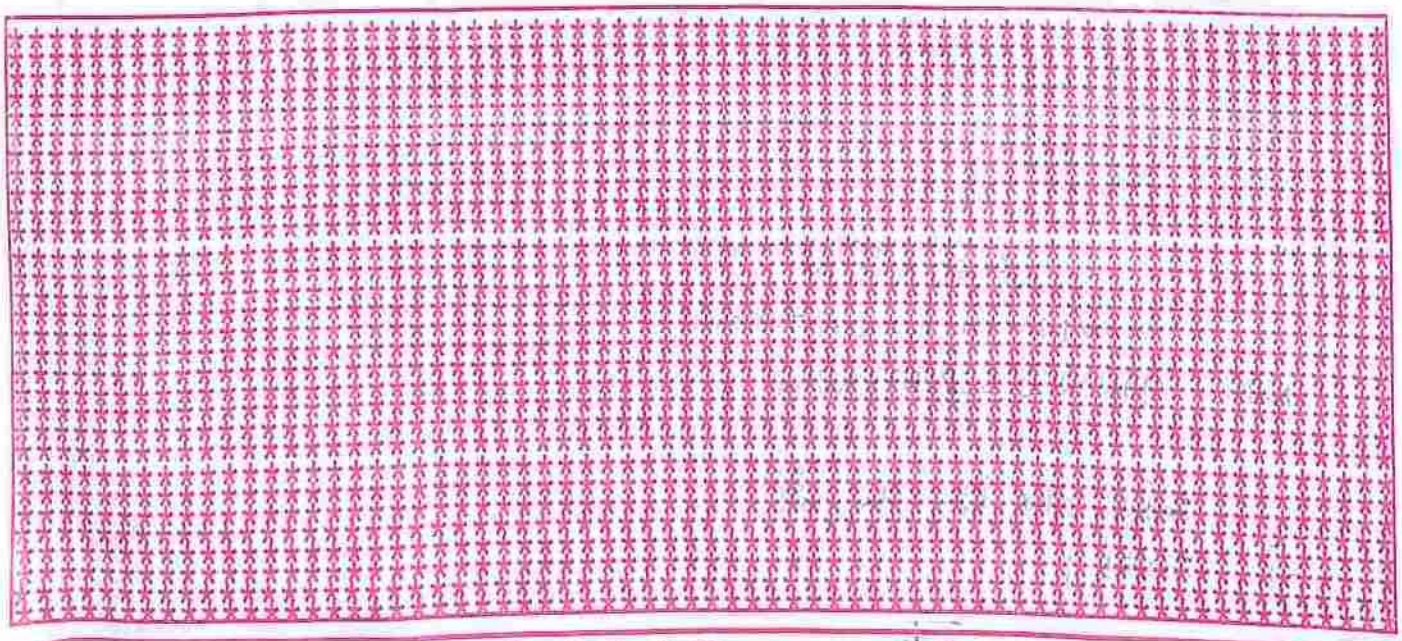
प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर .....

संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज का उपयोग में लिया गया है। 165/2019



परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंषा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध हैं।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - अ

उत्तर - (1)

ऋग्वेद में 10 मंडल है।

उत्तर - (2)

"हर्षचरित" के लेखक (रचयिता) बाणभट्ट है।

उत्तर - (3)

विक्रम संवत की शुरुआत 57 ई.पू. में विक्रमादित्य ने की थी।

उत्तर - (4)

"मिलिन्दपन्हो" पाली भाषा में लिखी गई पुस्तक है।

उत्तर - (5)

भारतीय एवं यूनानी कला का मिश्रण होने के कारण, इसे 'ग्रीको बुद्धिस्ट' भी कहा जाता है।

उत्तर - (6)

चतुर्थ बौद्ध संगीति का उद्देश्य बौद्ध धर्म में स्थित बुराईयों को समाप्त करना एवं महायान शाखा को बढ़ावा देना था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर-(7)

पृथ्वीराज का राजकवि चन्द्रबरदायी था। उसने 'पृथ्वीराज रासो' की रचना की।

उत्तर-(8)

शिवाजी का जन्म महाराष्ट्र राज्य के शिवनेर के पहाड़ी दुर्ग मे हुआ।

उत्तर-(9)

खानवा के युद्ध के बाद बाबर ने 'गाजी' की उपाधी धारण की

उत्तर-(10)

विजयस्तंभ मे अनेक हिन्दू देवी देवताओ की कलात्मक प्रतिमाएं उत्कीर्ण होने के कारण इसे "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोष" कहा जाता है।

खण्ड - ब

उत्तर-(11)

वैदिक साहित्य को ठीक तरह से समझने के लिए वेदांग साहित्य की रचना की गई। वेदो का अर्थ जानने के लिए इसकी रचना की गई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या

परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर – (12)

सबसे प्राचीन पुराण मत्स्य पुराण है।
पुराणो की संख्या 18 है।

उत्तर – (13)

रचनाए	रचनाकार
(i) इंडिका	मेगस्थनीज
(ii) मृच्छकटिकम	शुद्रक
(iii) पंचतंत्र	विष्णुशर्मा
(iv) राज तरंगिणी	कल्हण

उत्तर - (14)

संस्कृत भाषा को बढाने के प्रयास

(1) रुद्रदमन का जूनागढ अभिलेख संस्कृत भाषा मे लिखा गया है।

(2) रुद्रदमन का राजकवि भी संस्कृत भाषा का कविथा। उसने संस्कृत मे अनेक ग्रंथ छं पुस्तके लिखी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर - (15)

पीछा न करने के दो कारण

(1) अकबर के सैनिको को प्रताप के सैन्य ठिकानो का ध्यान न था।

(2) सैनिको या मुगल सैनिको को डर था कि कई प्रताप के भीली सैनिक पहाडो से आक्रमण न कर दे। अकबर के सैनिक पहले ही युद्ध में थक चुके थे।

उत्तर - (16)

1857 की क्रांति का तात्कालिक कारण

(1) ब्रिटिश सरकार द्वारा पुरानी बंदूक 'ब्राउन बेस' के स्थान पर नई बंदूक 'एनफील्ड राइफल' सैनिको को देना।

(2) एनफील्ड राइफल के उपरी भाग पर गाय एवं सूअर की चर्बी का प्रयोग होता था, इससे भारतीय हिन्दू एवं मुस्लिम सैनिको में तीव्र आक्रोश उत्पन्न हुआ।
यही कारण प्रमुख थे।

उत्तर - (17)

बालगंगाधर तिलक के दो समाचार -
(i) बालगंगाधर तिलक ने 'मराठा' समाचार का प्रकाशन किया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(ii) बाल गंगाधर तिलक ने 'केसरी' समाचार का प्रकाशन किया।

उत्तर - (18)

बिजोलिया किसान आंदोलन के दो नेता -

(1) बिजोलियाँ किसान आंदोलन में साधु सीताराम दास ने भागीदारी निभाई।

(2) बिजोलियाँ किसान आंदोलन में विजयसिंह पथिक ने भागीदारी निभाई थी।

खण्ड - द

उत्तर - (28)

अशोक एक महान मौर्य सम्राट था। वह अपने पिता बिन्दुसार की मृत्यु के बाद 269 ई. पू में राजगद्दी पर बैठा। वह एक महान शक्तिशाली एवं प्रतिभासंपन्न व्यक्ति थे। उन्होंने जनकल्याण हेतु अनेक कार्य किये एवं धम्म की अवधारणा प्रस्तुत की।

* **धम्म की परिभाषा :-** अशोक ने विभिन्न वर्गों, जातियों एवं संस्कृतियों को एक सूत्र में बाँधने एवं अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए जिन आचारों की संहिता प्रस्तुत की उसे, अभिलेखों में धम्म कहते हैं।

* धम्म का उल्लेख द्वितीय स्तंभ अभिलेख में मिलता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

* जनकल्याण की अवधारणा :→ अशोक ने अपनी प्रजा के नैतिक उत्थान के लिए धम्म सिद्धांत अपनाकर अनेक महत्वपूर्ण कार्य किये। जो निम्न है।

(1) सहिष्णुता :→ अशोक ने विभिन्न विचारो में एवं जनसामान्य में आत्म सहिष्णुता पर बल दिया। उसने जनसामान्य में एवं विभिन्न विचारो में आत्मसहिष्णुता का प्रचार किया।

(2) अहिंसा :→ कलिंग युद्ध के बाद अशोक ने अहिंसा का त्याग कर दिया। इस युद्ध के बाद अशोक ने भेरी घोष को त्यागकर धम्म घोष को अपनाया। अशोक ने अपनी जनता को जीव हत्या न करने की प्रेरणा दी।

(3) लोककल्याणकारी कार्यों पर बल देना :→ अशोक ने अपनी जनता के विकास के लिए अनेक कल्याणकारी कार्य किये। अशोक ने सड़को, सरायो, कुँओ, अस्पतालो आदि अनेक निर्माण कार्य कराकर जनकल्याण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(4) **धम्ममहामात्र की नियुक्ति :→** अशोक ने अकारण दंडितों के परिवारों को सहायता देने, गरीबों की सहायता के लिए धम्म महामात्र की नियुक्ति की।

(5) **धम्म का निषेधात्मक रूप :→** अशोक ने अंधविश्वासों के फलस्वरूप जो निरर्थक यज्ञ एवं अनुष्ठान किये जाते थे आदि धार्मिक अंधविश्वासों का विरोध किया। इस प्रकार अशोक ने धम्म अपनाकर बहुत बड़ी भूमिका निभाई जो आज भी प्रासंगिक है।

उत्तर-(29)

(अ) **बंगाल विभाजन :→** बंगाल राष्ट्रवादियों का प्रमुख केन्द्र बनता जा रहा था। इससे ब्रिटिश सरकार चिंतित थी एवं उन्हें डर था कि कहीं ये विद्रोह न कर दे।

विभाजन के कारण :→ बंगाल में राष्ट्रीय आंदोलन को कुचलने एवं बंगाल में बढ़ती क्रांतिकारी घटनाओं को रोकने के लिए लार्ड कर्जन ने 16 अक्टूबर, 1905 को बंगाल का विभाजन कर दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

* **बंग-भंग विरोधी आंदोलन :→** बंगाल विभाजन को लेकर अनेक क्रांतिकारियों, आंदोलनकारियों एवं वहाँ की जनता ने इसका तीव्र विरोध किया। अगस्त, 1906 में बंग-भंग विरोधी आंदोलन तीव्र गति से बढ़ा। इसमें क्रांतिकारियों का लगातार सफलता मिलती रही।

* **बंग-भंग समाप्त करना :→** अंत में ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों में बढ़ते तीव्र विरोध को देखकर 1911 में बंग-भंग समाप्त कर दिया।

* **सुभाष चंद्र बोस :→** भारतीय स्वतंत्रता के महानी स्वतंत्रता सेनानी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी 1897 ई में उड़ीसा के कटक में हुआ था।

* **भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में भूमिका**

(1) **आजाद हिन्द फौज की स्थापना :→** भारतीय युद्ध बंदियों के समाधान को लेकर 1 सितंबर 1942 ई में सुभाषचंद्र बोस ने आजाद की फौज की स्थापना कर दी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(2) दिल्ली चलो का नारा बुलंद करना :→ सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिन्द फौज के सैनिको के समक्ष दिल्ली चलो का नारा दिया।

(3) गाँधी, नेहरू एवं सुभाष ब्रिगेड का गठन :→ सुभाषचन्द्र बोस ने गाँधी नेहरू एवं सुभाष ब्रिगेड का गठन किया एवं भारतीयराष्ट्रीय आंदोलन मे योगदान दिया।

(4) अस्थाई भारत सरकार की स्थापना :→ सुभाषचंद्र बोस ने 21 अक्टूबर, 1943 ई को अस्थाई भारत सरकार की स्थापना कर दी।

(5) सुभाषचंद्र बोस का मूल्यांकन :→ सुभाषचंद्र बोस ने भारतीय राष्ट्रीय आँदोलन मे महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने भारतीयों मे राष्ट्रीयता की भावना को और तीव्र कर दिया। अतः उन्होने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में प्रेरणादायक कार्य किया।

* अगस्त 1945 मे जापान के आत्मसमर्पण के बाद फारमूसा के ताइहोकू हवाईअड्डे से रवाना होते समय विमान दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई। जयहिन्द।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - ब

उत्तर - (20)

सन् 643 ई में हर्ष ने प्रयाग में महामोक्ष परिषद् का आयोजन किया। इस सभा का प्रमुख उद्देश्य बौद्ध धर्म का प्रचार करना था। इस सभा में 20 राजा ने भाग लिया था। इस सभा में 50,0000 लोग एकत्रित हुए थे। बुद्ध ने पहले दिन बुद्ध की मूर्ति की पूजा कर गरीबों एवं अनाथों को दान दिया। बाद में उसने बौद्ध भिक्षुओं को दान दिया। यह सभा 75 दिन तक चली थी। इसमें बौद्ध धर्म के प्रचार के साथ हर्ष ने धर्मसहिष्णुता प्रेम एवं समरसता का प्रचार किया था। इस सभा ने अपना सारा संचित धन बांट दिया एवं अंत में अपनी बहन राजश्री से पुराना वस्त्र मांगकर धारण कर लिया। इस प्रकार यह सभा 75 दिन तक चली थी। ये छठी महामोक्ष परिषद् थी जो प्रयाग नामक स्थान पर हुई।

उत्तर - (21)

कनिष्क एक महान बौद्ध धर्म प्रचारक था। उसने धर्म के प्रचार के लिए अनेक प्रयास किये एवं बौद्ध धर्म को सर्वश्रेष्ठ बनाने में योगदान किया एवं लोगों में इसके प्रति जागृति उत्पन्न की।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(1) बौद्ध धर्म को राज्याश्रय प्रदान करना :→ कनिष्क बौद्ध धर्म का महान प्रचारक था। उसने बौद्ध धर्म की महायान शाखा को राज्याश्रय घोषित कर उसको संरक्षण प्रदान किया।

(2) कश्मीर के कुंडलवन में सभा :→ कनिष्क ने कश्मीर के कुंडलवन नामक स्थान पर एक सभा आयोजित कर बौद्ध धर्म की महायान शाखा का प्रचार-प्रसार किया व लोगो मे इसके प्रति रुचि जागृत की।

(3) बौद्ध स्तूपों व विहारो का निर्माण :→ कनिष्क ने गंगा नदी के तट पर व अन्य पवित्र बौद्ध स्थलो पर बौद्ध विहारो व स्तूपो का निर्माण करवाया।

(4) बौद्ध धर्म प्रचारको को भेजना :→ कनिष्क ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए बौद्ध धर्म प्रचारको को मध्य एशिया, चीन, जापान, तिब्बत आदि अनेक स्थानो पर भेजा व बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार करवाया।

अतः "कनिष्क बौद्ध धर्म का महान संरक्षण था"।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर - (22) :

(1) सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण :→ रणथंभौर सामरिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण था। अलाउद्दीन खिलजी इस पर अपना अधिकार करना चाहता था। इसी कारण उसने इस पर आक्रमण किया।

(2) साम्राज्यवादी एवं महत्वाकांक्षी भावना :→ अलाउद्दीन खिलजी एक साम्राज्यवादी एवं महत्वाकांक्षी शासक था। अपनी साम्राज्यवादी भावना के कारण उसने रणथंभौर पर आक्रमण किया।

(3) अपने चाचा का बदला लेना :→ अलाउद्दीन खिलजी अपने चाचा जलालुद्दीन की पराजय का बदला लेना चाहता था। इसी कारण उसने बदला लेने के कारण इस पर आक्रमण कर दिया था।

(4) इस्लाम धर्म का प्रचार करना :→ इस्लामी शासक होने के कारण अलाउद्दीन खिलजी यहाँ आक्रमण कर यहाँ पर भी इस्लाम धर्म का प्रचार करना चाहता था। अतः निम्न कारणों से उसने रणथंभौर पर आक्रमण किया था।

* इस प्रकार 11 जुलाई, 1301 में अलाउद्दीन खिलजी ने रणथंभौर पर अधिकार कर लिया था।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर - (23)

हाँ हम कह सकते हैं कि ये संधि अंग्रेजो के लिए अपमानजनक थी क्योंकि अंग्रेजो को मराठो से संधि कर उनकी शर्ते स्वीकार की।

29 जनवरी 1779 ई. मे बडगाव की संधि अंग्रेजो व मराठो के बीच हुई थी जिससे मराठो की शर्ते अंग्रेजो को स्वीकार करनी पड़ा।

* प्रमुख कारण

(1) मराठो के विजित प्रदेश पुनः लौटना :→ इस संधि द्वारा अंग्रेजो ने यह स्वीकार कर लिया कि अंग्रेज मराठो द्वारा विजित प्रदेश पुनः मराठो को लौटा देंगे।

(2) हर्जाने के रूप मे राशि स्वीकार करना :→ अंग्रेजो ने हर्जाने के लिए मराठो को 41,000 रुपये देना स्वीकार कर लिया। ये अंग्रेजो का भारी अपमान था। इससे उनको प्रबल आघात पहुँचा।

(3) पेशवा को सौंपना :→ इस संधि द्वारा अंग्रेजो ने राघोबा को पेशवा को सौंपना स्वीकार लिया। इस स्वीकृत से उनका भारी अपमान हुआ।

(4) आय देना स्वीकार करना :→ इस संधि द्वारा अंग्रेजो ने आय संधियों को देना स्वीकार कर लिया। इस प्रकार ये सभी कारण इनकी अपमान के लिए उत्तरदायी बने।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर-(27)

राजस्थान में राजनीतिक चेतना के प्रसार में समाचार-पत्रों एवं साहित्य ने महत्वपूर्ण भूमिका निई।

(1) राजपूताना गजट एवं राजस्थान समाचार :→ 1865 में प्रकाशित राजपूताना गजट एवं 1889ई में प्रकाशित प्रारंभिक समाचार राजस्थान समाचार ने लोगों में राजनीतिक चेतना के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन समाचार से अंग्रेजो के दुर्व्यवहार की घटना छपने लगी।

(2) राजस्थान केसरी एवं नवीन राजस्थान पत्रों का योगदान :→ विजयसिंह पथिक एवं राजस्थान सेवासंघ द्वारा प्रसारित समाचारो ने राजनीतिक जनचेतना के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन समाचारो को पढ़ने से राजस्थान निवासियों में स्वतंत्रता की भावना और तीव्र हो गई।

(3) स्वामी दयानंद द्वारा रचित साहित्य :→ स्वामी दयानंद ने अनेक साहित्य एवं पुस्तको का प्रकाशन कर लोगों में राजनीतिक जागृति एवं राष्ट्रीय भावना जागृति उत्पन्न की। अब लोग इन समाचार को पढकर अनेक तीव्र गति से रुचि लेना स्वीकार किया।

(4) गोविंद गुरू के साहित्य का योगदान :→ गोविंद गुरू ने अनेक साहित्यिक ग्रंथो की रचना कर भीलो में राजनीतिक चेतना जागृत की।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर-(26)

(1) अंग्रेजो की शोषण की आर्थिक नीति :→ अंग्रेजो की शोषण की आर्थिक नीति ने लोगो को आंदोलन चलाने के लिये विवश किया। इस शोषण से छुटकारा पाने के लिए किसानो ने रामनारायण चौधरी के नेतृत्व मे आंदोलन किया।

(2) विभिन्न प्रकार की लाग-बाग लगाना :→ अंग्रेजो ने सीकर के किसानो पर अनेक प्रकार की लागे-बागे लगा दी जिसके फलस्वरूप इतनी मेहनत करने के बावजूद भी अपेट भोजन जुटना मुश्किल हो गया।

(3) किसानो पर राजा द्वारा लगान मे वृद्धि करना :→ सीकर के राजा ने किसानो की लगान मे 25 से 50 प्रतिशत तक वृद्धि कर दी जिसके कारण जनता मे तीव्र आक्रोश उत्पन्न हुआ। इससे जनता ने इसके विरोध आंदोलन कर दिया।

(4) किसानो की जमीन का लेखा-जोखा न रखना :→ अंग्रेजो द्वारा सीकर के किसानों की जमीन का लेखा जोखा न रखा जाता था। इसी कारण जनता ने परेशान होकर इन जमींदारो एवं अंग्रेजो के विरोध आंदोलन कर दिया जो सीकर किसान आंदोलन कहलाया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर-(25)

स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 ई को कलकत्ता में हुआ था। उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। इसी दृष्टि से उनके अनेक विचार एवं कार्य आज भी राष्ट्रीय भावना में प्रेरणादायक सिद्ध हुए हैं।

(1) अपना प्रसिद्ध नारा :→ अपना भारतीयों को प्रसिद्ध नारा दिया कि 'उठो, जागो और तब तक मत रुको कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाये'। उनका ये कथन आज भी हमें राष्ट्रीय भावना से भर देता है।

(2) शिकागो धर्म सम्मेलन में भाषण देना :→ शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में भाग लेने के लिए स्वामी विवेकानंद जी सितंबर 1893 ई में खेतड़ी के राजा अजीत सिंह की सहायता से शिकागो पहुंचे एवं वहां पहुँचकर अपना प्रसिद्ध भाषण 'प्रिय भाइयों एवं बहनों' से संबोधित किया। उन्होंने वहां हिन्दु धर्म की मौलिकता पर भाषण दिया जो आज में विश्वभर में सराया जाता है। उन्होंने इस भाषण से राष्ट्रीय भावना को और अधिक तीव्र कर दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

(3) राष्ट्र के प्रति आस्था रखना :→ उन्होंने भारतीय नागरिकों में अपने देश के प्रति जागृति उत्पन्न कर दी। उन्होंने कहा कि हमें हमारे राष्ट्र के प्रति समर्पित रहना चाहिए। एवं अपने हृदय में राष्ट्रीयता की भावना रखनी चाहिए। उन्होंने 'नर सेवा नारायण सेवा' का संदेश दिया।

(4) रामकृष्ण मिशन की स्थापना :→ उन्होंने 5 मई 1897 में रामकृष्ण परमहंस की स्थापना की। इसके माध्यम से भारतीयों को अपनी संस्कृति के प्रति जागृत कर राष्ट्रीयता की भावना का प्रसार किया। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक कुरीतियों का विरोध कर राष्ट्रहित में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अतः उनके प्रत्येक वचन एवं कार्य हमें वर्तमान में भी राष्ट्रीय भावना के लिए प्रेरित करते हैं।

उत्तर - (24)

(1) बंगाल पर अधिकार हो जाना :→ बक्सर के युद्ध के बाद बंगाल पर पूर्ण रूप से अंग्रेजों का अधिकार हो गया था। अब भारत का समृद्ध प्रदेश उनके अधिकार में आ गया एवं उनको बिना किसी समस्या के कर एवं व्यापार करने की स्वतंत्रता मिल गई। इससे अंग्रेजों की शक्ति में बहुत अधिक वृद्धि हो गई। जिसने उनको अखिल भारतीय शक्ति बना दिया।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(2) अंग्रेजो को अपनी सत्ता स्थापित करने का अवसर मिलना :→ अब अंग्रेजो को भारत में पूर्णरूप से लगभग सत्ता स्थापित करने का अवसर मिल गया। जिन शक्तियों से उनको लड़ना पड़ता था वो इस युद्ध के साथ ही समाप्त हो गई।

(3) कलकत्ता में स्वतंत्र टकसाल की स्थापना :→ इस युद्ध के बाद अंग्रेजो ने पूर्ण रूप से टकसाल की स्थापना कर दी। अब इस टकसाल पर अंग्रेजो का अधिकार हो जाने से वे और अधिक शक्तिशाली हो गये थे। इसी युद्ध ने उन्हे अखिल भारतीय शक्ति बना दिया।

(4) मराठा शक्ति को प्रबल आघात पहुँचना :→ इस युद्ध के कारण अब मराठो शक्ति को भी प्रबल आघात पहुँचा। अब मराठो की शक्ति मे कमी होने लगी जिससे ब्रिटिश सरकार को भारत मे अपनी सत्ता स्थापित करने का अवसर मिल गया। इन्ही प्रमुख चार कारणों ने बक्सर के युद्ध के बाद ब्रिटिश सरकार को एवं ईस्ट इंडिया कम्पनी को अखिल भारतीय शक्ति बना दिया।

* बक्सर का युद्ध 22 अक्टूबर, 1764 को अवध के नवाब शुजाउद्दौला, बंगाल के नवाब मीर कासिम, शाहआलम की सेना एवं अंग्रेजो की संयुक्त सेना के बीच हुआ जिसमे अंग्रेजो की विजय हुई।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

उत्तर - (19)

सिंधु-सरस्वती काल में आंतरिक एवं विदेशी व्यापार दोनो ही उन्नत थे। उस समय अनेक वस्तुओं का निर्माण कर देश के अंदर एवं बाहर भी निर्यात करते थे। उस समय धातु, पत्थर, मिट्टी आदि की अनेक मूर्तियां बनाकर उनका व्यापार किया जाता है। मणके, मृद्भांड आदि अनेक चीजों को बनाकर उनको देश में बेचने के साथ विदेशों में भी निर्यात किया जाता था। उस समय काली मिर्च, लौंग, इलायची आदि अनेक वस्तुओं का निर्यात होता था। सिंधु निवास कृषि कार्य कर अन्न उपजाते थे। वे अन्नाजों का विदेशों में भी निर्यात करते थे। उस समय वे घोड़ो का भी व्यापार करते थे। उस समय सोना, चाँदी आदि अनेक वस्तुओं का उत्पादन होता था। सोना, चाँदी का विदेशों में भी निर्यात किया जाता था। उस समय सोना मैसूर से एवं चाँदी गणेश्वर में उत्पादित एवं मिलती थी। इस प्रकार सिंधु निवास कई कृषि आदि कर अपनी आवश्यकता की पूर्ति कर लेते थे। अतः इस प्रकार हम कह सकते है कि उस समय आंतरिक एवं विदेशी व्यापार दोनो ही उन्नत थे। अनेक स्थानों से बंदरगाह एवं विदेशों में इनके व्यापार के अवशेष मिले है।

* जुते हुए खेत के अवशेष कालीबंगा से मिले। विदेशी अवशेष एवं अनेक बंदरगाह संकेत देते है कि उस समय सोने-चाँदी एवं मणके का व्यवसाय उन्नत था। इस प्रकार उस समय विदेशी एवं आंतरिक व्यापार दोनो ही उन्नत थे।

समाप्त

Sl.No. : 012086

नामांक Roll No.

2	9	1	5	9	7	9

SS–13–Hist.

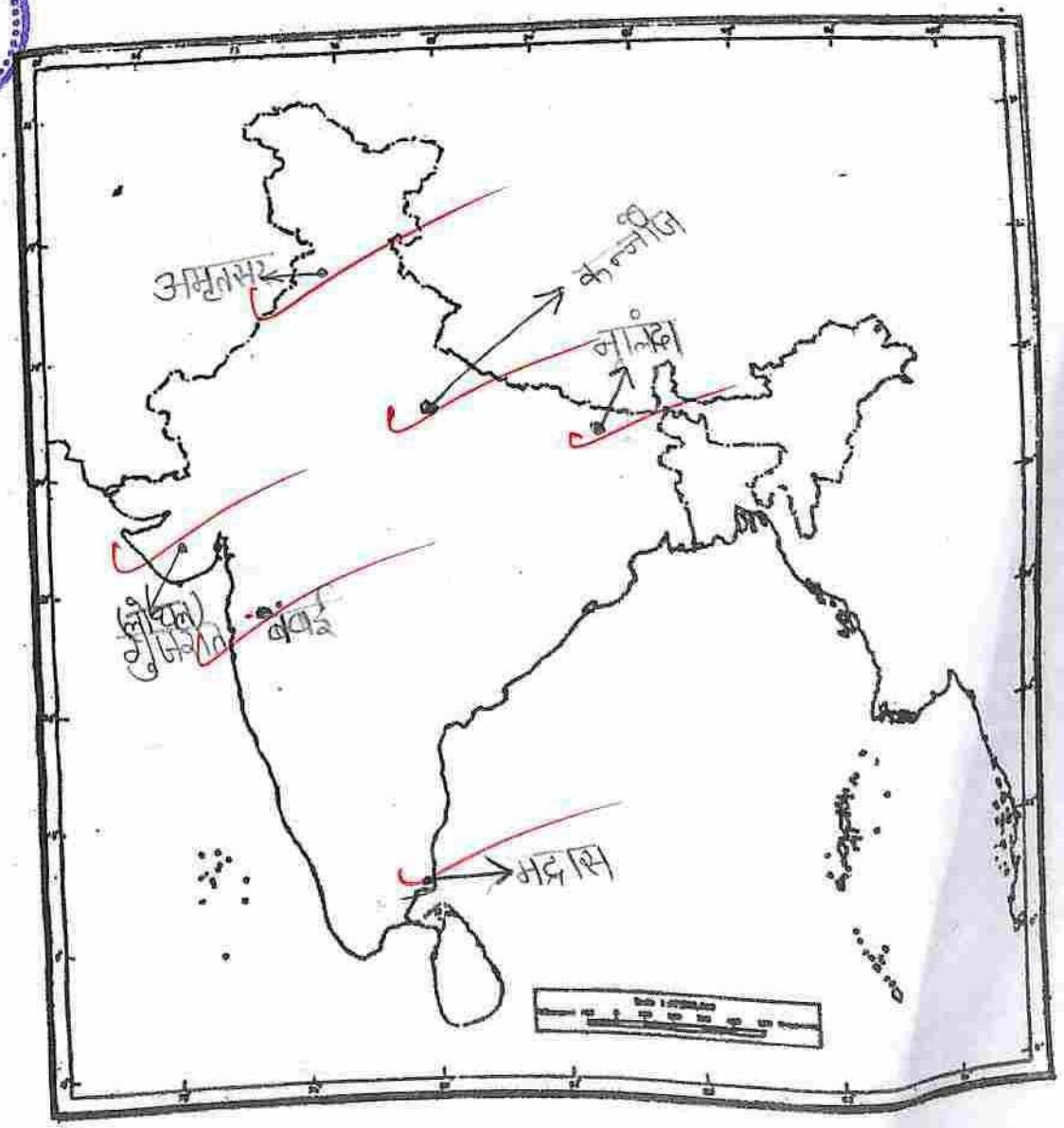
उच्च माध्यमिक परीक्षा, 2019

SENIOR SECONDARY EXAMINATION, 2019

HISTORY

इतिहास

Q. 30



परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर